मेरे तो गिरधर गोपाल

Mere To Girdhar Gopal • भजन • देवनागरी

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥

तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई॥

संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
चुनरी के किये टूक, ओढ़ लीन्ही लोई॥

अँसुवन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई॥

दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दई छोई॥

भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोही॥

रचना / पाठ-परंपरा: मीराबाई; प्रचलित पारंपरिक पद
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।